असल में जो जितनी नैतिकता की बातें करते हैं, अपने को आदर्शवान बनते हैं, बहुधा वे उतने ही अँधेरे कुँए में बैठे होते हैं, हाथों में कुँए से बाहर को टार्च की रोशनी करते कि वे यहाँ हैं। पर उन्हें कुँए से निकालने का दुस्साहस मत करना। उन्हें वहाँ से निकालने की हर ईमानदार कोशिश करो पर वे हर कोशिश बेकार कर ही दम लेते हैं। व्यंग्य ऐसे ही अँधेरे को उजाला मान लेने वालों के लिए सुई की नोक भर किरण है जो दिमाग़ में प्रवेश करते ही उसका कोना-कोना प्रकाश से लक-दक कर देता है। कहते हैं पक्के घड़ों में बिल नहीं लगते। कुम्हार से बात हुई तो उसने ही अपने अनुभव बाँटते बताया। पर कोशिश करने में हर्ज क्या! व्यंग्य के पास हर मर्ज़ का इलाज रहता है।

मेवामय यह देश हमारा

और फिर मैं देश हित के कामों में जुट गया। देखते ही देखते मेरे वारे-न्यारे हो गए। मत पूछो भाई साहब! देश सेवा में कितना मेवा है! खाए जाओ, बस खाए जाओ, पर देश के थाल से देश सेवा का मेवा ख़त्म ही न हो। हे मेरे देश, तुम कितने मेवामय हो? तुम्हें मेरा मरने के बाद भी कोटि-कोटि नमन! मेवा पचाने वाले में हिम्मत होनी चाहिए बस! खिलाने वाले तो अपने मुँह का हिस्सा तक खिलाने को पलकें बिछाए इंतज़ार में खड़े हैं।

भ्रमण को व्यग्र मँझले बाबू

कितने अरमानों से उन्होंने कई बार आपदाग्रस्त क्षेत्र के भ्रमण का आनंद लेना चाहा पर हर बार ऐन मौक़े पर बाजी और ही मार जाते और उनका नाम आपदाग्रस्त क्षेत्र का भ्रमण करने वाली टीम में से ऐसे निकाल दिया जाता जैसे दो कौड़ी का हलवाई मूँछें न होने के बाद भी मूँछों पर ताव देते दूध में से सबके सामने मरी मक्खी निकाल परे कर देता है हँसते हुए।

देशभक्ति टीकाकरण अभियान

"प्रभु! अपने देश में आज पता ही नहीं चल रहा कि असली देशभक्त कौन है? सत्ताधारी कहते हैं कि उनसे बढ़कर दूसरा कोई देशभक्त आज की तारीख़ में हो ही नहीं सकता तो विपक्ष वाले गला फाड़ फरमा रहे हैं कि उनकी देशभक्ति ही होलमार्क है, शेष सब लोहे पर सोने का पानी। उधर उन लुच्चों को देखो तो वे अपनी देशभक्ति को तीनों लोकों के देशभक्तों की देशभक्ति से सर्वश्रेष्ठ कहते फिर रहे हैं। ऐसे में.... हमारी दुविधा का समाधान हो तो प्रभु हम चैन से ...," भगतसिंह ने गरमाते कहा तो कुछ देर तक कुछ सोचने के बाद प्रभु ने सबको शांत करते कहा, "मित्रो! किसकी देशभक्ति श्रेष्ठ है और किसकी देशभक्ति हल्की, यह कहना तो कठिन होगा। देशभक्ति दूध की फ़ैट नहीं जिसे लैक्टोमीटर की सहायता से मापा जाए।"

राहू केतू का मारा सर्वहारा

कई दिनों से अपने ख़ास यार दोस्तों से बहुत परेशान चल रहा था। जिस दोस्त पर भी विश्वास करता वही धोखा दे मुस्कुराता, ताल ठोकता आगे हो लेता। जब उनसे बचने के सारे जत्न कर हार गया तो गृह शेरनी पर ग्रह भीरू बीवी ने सलाह दी, "लगता है आप पर किसी बुरे ग्रह की दशा चल रही है। तभी तो शरीफ़ दोस्त भी आपको आजकल मज़े से चूना लगाए जा रहे हैं। मेरी मानो तो किसी पंडित जी के पास अपनी जन्मपत्री दिखवा लो। तुम कहो तो मेरी नालिज में पहुँचे हुए पंडित जी हैं। उनसे टाइम ले लूँ, चेहरा देखकर ही ये इस जन्म तो इस जन्म, सात जन्म आगे-पीछे की सारी बातें बता देते हैं।"